(सत्याग्रह मंडप,गांधी दर्शन, राजघाट)

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा द्वारा आयोजित" अमृत महोत्सव

किसी भी तीर्थस्थल अथवा भारत के किसी भूभाग की यात्रा पर जाने का जब तक संयोग नहीं बनता, लाख चाहने के बावजूद भी आदमी वहाँ नहीं जा पाता. ऎसा मेरा अपना मानना है. इसे संयोग ही कहें कि "राष्ट्रभाषा प्रचार समिति,वर्धा का "अमृत महोत्सव"राजघाट के निकट "सत्याग्रह मंडप,गांधी दर्शन के विशाल सभा मंडप में 16--17 मार्च 2013 को भव्य आयोजन के साथ संपन्न हुआ. महात्मा गांधी द्वारा स्थापित राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा ने हिन्दी सेवा के गौरवशाली 75 वर्ष पूर्ण कर लिए थे. इस उपलक्ष में संस्था द्वारा दो दिवसीय विमर्श को "भारतीय भाषाओं के बीच संवाद" और हिन्दी के समक्ष उपस्थित चुनौतियो" पर केन्द्रीत किया गया था. इन दो दिवसीय सत्र का उद्घाटन भारत के तत्कालीन गृहमंत्री माननीय श्री सुशीलकुमार शिंदे ने दिन शनिवार दिनांक 16 मार्च को प्रातः 11 बजे किया.तथा 17 मार्च को अपरान्ह 3 बजे समापन-सत्र को तत्कालीन लोकसभा में विपक्ष की नेता माननीया श्रीमती सुषमा स्वराज ने संबोधित किया.

इस भव्य कार्यक्रम की परिकल्पना म.प्र.राष्ट्रभाषा प्रचार समिति भोपाल के मंत्री-संचालक मान.श्री कैलाशचन्द्र पंतजी ने की थी. अपनी अस्वस्था के बावजूद वे इस कार्यक्रम की सफ़लता के लिए प्राणपन से समर्पित रहते हुए अथक परिश्रम करते रहे .श्री अनन्तराम त्रिपाठी (प्रधानमंत्री), सुश्री मणिमाला (निदेशक, गांधी स्मृति दर्शन समिति), श्री नारायण कुमार (संयोजक दिल्ली राष्ट्रभाषा प्रचार समिति,एवं

समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष मान.न्यायमूर्ति श्री चन्द्रशेखर धर्माधिकारीजी ने अपनी गरीमामय उपस्थिति से इस कार्यक्रम को भव्यता प्रदान की.

उद्घाटन सत्र= **16** मार्च,**2013 :** समय **10.00**बजे

मान.न्यायमूर्ति चन्द्रशेखर धर्माधिकारीजी की अध्यक्षता में, मुख्य अतिथि मान.श्री सुशील कुमार शिंदे(तत्कालीन गृह मंत्री) की गरिमामय उपस्थिति में श्री अंनतराम त्रिपाठीजी ने स्वागत भाषण दिया. श्री कैलाशचन्द्र पंतजी ने कार्यक्रम की प्रस्तावना. एवं श्री नारायणकुमार ने इस सत्र का संचालन किया.

प्रथम विमर्श सत्र- भारतीय भाषाओं का अन्तरसंवाद

समय: 12:00 से 2:00 बजे अध्यक्ष: श्री विश्वनाथ त्रिपाठी बीज वक्तव्य: डा..विमलेश कान्ति वर्मा वक्ता: श्री जाबिर हुसैन, डा.शेषारत्नम, सुश्री मणिमाला संचालन:- श्रीमती अलका सिन्हा. (भोजन 2.00 बजे से 3.00 दोपहर)

द्वितीय विमर्श:-भारतीय भाषाओं पर अंग्रेजी का हस्तक्षेप

समय: शाम 3.: से 5 बजे

अध्यक्ष:-श्री टी.एन.चतुर्वेदी (पूर्व राज्यपाल) बीज वक्तव्य:-श्री राहुल देव वक्ता:-डा. ललिताम्बा,प्रो.हरीश त्रिवेदी, श्री शशि शेखर, भारतीय भाषाओं के लेखाकों के बीच सारस्वत संवाद ब्रजेन्द्र त्रिपाठी,,सुनिता शर्मा,डा.सुरेश,सुश्री ऊषाराजे सक्सेना, विनोद लव्केश,हरजेन्द्र चौधरी,डा.पन्नालाल पांचाल,डा.बल्देव वंशी,प्रेमलाल शर्मा,(सचिव रेल्वे)श्री पांचाल((UPSC) संचालन;-डा. जवाहर कर्नावट

तृतीय सत्र:-भारतीय भाषाएं और भूमण्डलीकरण

दिनांक;-17 मार्च 2013 समय; 10.30 बजे से 12.00 बजे तक अध्यक्ष:- श्री मदनलाल मधु बीज वक्तव्य:- ड. चित्रा मुदगल वक्ता:-डा. कमलकुमार, डा.कुमुद शर्मा, डा राजेन्द्र प्रसाद मिश्रा संचालन:-डा.मीनाक्षी जोशी

चतुर्थ विमर्श:-हिन्दी संस्थाएं और भावी दिशाएं दिनांक:-17 मार्च 2013, समय 12:15 से 2.00 बजे तक अध्यक्ष:-डा. रत्नाकर पांडे, पूर्व सांसद बीज वक्तव्य:- डा. अमरनाथ, ड. वेदप्रताप वैदिक,डा.केशरीलाल वर्मा संचालन:- प्रसून लतांत (भोजन 2.00 - 3.00 तक)

समापन सत्र.—समय 300 से 5 बजे शाम

मुख्य अतिथि:- श्रीमती सुषमा स्वराज, नेता प्रतिपक्ष,लोकसभा अध्यक्ष:- न्यायमूर्ति चन्द्रशेखर धर्माधिकारी स्वागत भाषण:- श्री कैलाशचन्द्र पंत वक्तव्य:- डा.प्रभाकर श्रोत्रीय आभार:- श्री नारायण कुमार. संचालन:- श्री अनिल जोशी

<u>अमृत महोत्सव में निम्नलिखित भारतीय भाषाओं के विद्वानों को सम्मानीत किया गया</u>

डा. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी (हिन्दी.) श्री रघुवीर चौधरी (गुजराती)
डा. राधा वल्लभ त्रिपाठी (संस्कृत) श्री अख्तरुल वासे (उर्दू)
डा.एच.बालसुब्रमण्यम(तमिल) श्री ब्रजनाथ बेताब(कश्मीरी)
डा. एस.शेषारत्नम (तेलुगू) श्री मोहनसिंह (डोगरी) श्री एषुमट्टटोर राजराज वर्मा (मलयालम) डा.श्री विनोद असुदानी(स्सिन्धी) सुश्री प्रतिभानंद कुमार(कन्नड) श्री रमेश वेलुस्कर (कोंकणी) श्री रा.ग. जाधव(मराठी) श्री सतीशकुमार वर्मा (पंजाबी) सुश्री

नवनीता राय (उडिया)   श्री रजेन्द्र मिश्र (उडिया-हिन्दी)   सुश्री
अरूप बरूआ(असमी)   श्री रामशंकर द्विवेदी (बंगला-हिन्दी)

दिल्ली में रहते हुए हमें शाम का वक्त मिलता. इस समय का हम भरपूर उपयोग करते. पास ही स्थित गांधी-समाधी जाते और पुज्य बापू के चरणॊं में अपना शीश झुका कर अपना अहोभाग्य समझते. गांधीजी को हम देख तो नहीं आए थे,क्योंकि उस समय मेरी उम्र छः साल की थी,लेकिन बाद में उनके साहित्य को पढकर गांधीजी को थोडा बहुत समझ पाए. एक ऎसे संत की समाधी के पास कुछ समय तक बैठकर उनकी स्मृतियों में तल्लीन हो जाते. ऎसा करते हुए महान वैज्ञानिक आईंस्टीन ने कभी बापू के बारे में कहा था कि लोग विश्वास नहीं करेंगे कि एक हाड-मांस के व्यक्ति ने बिना रक्त बहाए देश को आजादी दिला दी.[कृपया संशोधित करें.) महात्मा गांधी के बारे में उन्होंने यह भी कहा था:-

I believe that Gandhi’s views were the most enlightened of all the political men of our time. We should strive to do things in his spirit: not to use violence in fighting for our cause, but by non-participation in anything you believe is evil.

.

गांधी-समाधी   (बाएं से दांए=गोवर्धन यादव,डी.पी.चौरसिया,नर्मदाप्रसाद कोरॊ एवं मंगरुलकरजी

बाऎं से दाएं=श्री श्रोत्रीयजी,धर्माधिकारीजी एवं कैलाशचन्द्र पंतजी   दर्शक दीर्घा का दृष्य़

सम्मान दिए जाने का दृष्य

सम्मा. धर्माधिकारीजी का संबंध मुलताई से है.उनसे भेंट करते हुए यादव

(बाएं से दाएं श्री विष्णु मंगरुलकर,नर्मदा प्रसाद कोरी,
डी.पी.चौरसिया, गोवर्धन यादव,मान.न्यायमूर्ति धर्माधिकारीजी,
डा.श्री.विश्वनाथ त्रिपाठीजी)

अपने साहित्यिक मित्र श्री राष्ट्रकिंकरजी के साथ

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति,वर्धा के युवा कर्मठ साथी श्री नरेन्द्रकुमार दण्ढारेजी ने इस कार्यक्रम को सफ़ल बनाने के लिए अथक परिश्रम किया.निश्चित रुप से वे धन्यवाद के पात्र हैं.

गांधीजी की तस्वीर के समीप काली जैकेट में खडॆ श्री दण्ढारेजी

गोवर्धन यादव
संयोजक राष्ट्रभाषा प्रचार समिति
जिला इकाई,छिन्दवाडा(म.प्र.)480001

संपर्क - 09424356400